International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 1; January 2018; Page No. 37-38

'सारा आकाश' फिल्म और उपन्यास : एक नज़र

[1] Dr. B Anirudhan, [2] Saranya SS
[1] Principal, Nehru Arts and Science College Coimbatore, Tamil Nadu, India
[2] M.Phil Hindi, Nehru Arts and Science College Coimbatore, Tamil Nadu, India

सारांश
हिंदी साहित्य जगत में राजेंद्र यादव का बहुत बड़ा स्थान है| आज के सशक्त रचनाकारों में वे प्रमुख हैं| इस उपन्यास को बासु चटर्जी ने फिल्म बनाई| सारा आकाश की कहानी निम्न मध्यवर्गीय परिवार के युवक समर के संघर्ष की कहानी है| राजेंद्र यादव जी ने स्वयं इस उपन्यास की संवेदना को केंद्र में रखकर निम्न मध्यवर्गीय युवक के अस्तित्व का संघर्ष कहा है| इस उपन्यास की फिल्मी रूपांतरण में निर्देशक बासु चटर्जी उपन्यास की अस्तित्व नष्ट नहीं होते हुए की तरह है प्रस्तुत किया गया|

मूल शब्द : मध्यवर्गीय परिवार, संवेदना, अस्तित्व, फिल्मी रूपांतरण|

प्रस्तावना

सारा आकाश: एक तुलना

राजेंद्र यादव जी ने 'सारा आकाश' किताब 1952 में लिखा था, यानि आज से करीब साठ साल पहले| वैसे उसके करीब 8 साल पहले वे इसी पुस्तक को 'प्रेत बोलते हैं' नाम से लिख चुके थे| 'प्रेत बोलते' हैं से सारा आकाश में कई बदलाव उन्होंने लाया| 'राधाकृष्ण प्रकाश' द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में पाठकों की जिज्ञासा को देखते हुए 'प्रेत बोलते हैं' के वे अंश भी दिए गए हैं, जिन्हें सारा आकाश से बदल गया| अगर दोनों के अंत की तुलना करूं तो सारा आकाश का अंत मुझे ज्यादा बेहतर लगा| निम्न मध्यवर्गीय समाज को जिसने करीब से देखा हो या उसके अंग रहे हो वे बड़ी सहजता से इस कथा से अपने को जोड़ पाएंगे|

राजेंद्र यादव के 'सारा आकाश' एक निम्न मध्यवर्गीय युवक के अस्तित्वा के संघर्ष की, आशाओं, महत्वाकाम्क्षाओ और आर्थिक, सामजिक, सांस्कृतिक सीमओं के बीच चलते द्वन्द, हारने – थकने और कोई रास्ता निकलने की बेचैनी की कहानी है| पुस्तक की भूमिका में लेखक बताते है कि "किशोर मन में गूंजती रामधारी सिंह 'दिनकर' की पंक्तियां उपन्यास के नामकरण का स्रोत बनी|"[1]

सच्ची घटना पर आधारित इस उपन्यास की लोकप्रियता को देखते हुए 1969 में बासु चटर्जी ने 'सारा आकाश' नाम से ही एक फिल्म बनाई| फिल्म की दृष्टि में सारा आकाश अपनी भूमिका अच्छी तरह से निभाई| दर्शकों को सही रूप से निर्देशक बासु चटर्जी मनोरंजन किया| असल उपन्यास से अलग है,फिल्म सारा आकाश| उपन्यास के अंत में पाठकों के आंखों में आंसू आती है| लेकिन फिल्म के अंत में दर्शकों के होठों में मुस्कुराहट आते हैं क्योंकि फिल्म शुभ समाप्त हैं|फिल्म की दृष्टि में देखते है तो 'सारा आकाश' एक सफल सिनेमा है|

सिनेमा एक ऐसा माध्यम है कि दर्शकों को मनोरंजन करना इसका मुख्या उद्देश्य हैं| सिनेमा समाज को एक नई दिशा प्रदान की| समाज के लोगों को उद्धान करने केलिए एक फिल्म को कर सकते| फिल्म का एक उद्देश्य यह भी है कि लोग और समाज को सही रास्ता दिखाना| लेकिन सिनेमा लोगों के अस्तित्वा एवं पहचान को नई मोड़ प्रदान करती हैं|

हमारे अधिकांश फिल्मकारों मानता है कि सिनेमा का मूल उद्देश्य जनता को मनोरंजन करना हैं, लेकिन साहित्यिक कृतियों के ज़रिए दर्शकों की आशाओं को पूरा करना कठिन हो जाता हैं| इसके बावजूद भी अनेक प्रबुद्ध और सजग फिल्मकारों ने समय-समय पर नामी लेखकों की साहित्यिक कृतियों व रचनओं को आधार बनाकर सफल फिल्मों का निर्माण किया हैं|

"फिल्म एक ऐसा माध्यम है, जो जन-जन से जुड़े है, इसलिए फिल्मकारों साहित्यिक कृतियों को फिल्माने में थोड़ी-बहुत छूट भी ली है| कई बार लेखकों ने अपनी कृति के साथ खिलवाड़ करने की आरोप भी लगाये हैं,लेकिन यह भी उतना ही सच है कि फिल्म के माध्यम से साहित्यिक रचनाओं को बड़े पैमाने पर पहचान भी मिलती हैं|"[2]

राजेंद्र यादव के उपन्यास 'सारा आकाश'पर बासु चटर्जी ने इसी नाम से फिल्म बनाई| बड़ी दिलचस्प है उपन्यास के फिल्म बनने की कहानी बासु चटर्जी को सारा आकाश एक फिल्म की कहानी के रूप में आकृष्ट तो बहुत कर रही थी, लेकिन उनका मन यह मानने केलिए तैयार नहीं था कि कोई पति और पत्नी एक साल तक एक –दूसरे से बात ही न करें| राजेंद्र यादव ने कहा कि यह कहानी जिन लोगों की है उन्होंने एक साल नहीं लगभग सात साल तक एक-दूसरे से बात नहीं की| बासु चटर्जी चाहते थे कि "चूंकि यह कृति राजेंद्र यादव की है,इसलिए यदि पटकथा भी वाही लिखें तो श्रेष्ठ होगा|"3 राजेंद्र यादव का तर्क था कि सिनेमा और पुस्तक दोनों अलग –अलग माध्यम हैं| उनका कहना था कि अब जब सारा आकाश फिल्म के रूप में बन्नी शुरू हो गई तब उनका इस सिनेमा से कोई लेना –देना नहीं होना चाहिए| फिर यह तय हुआ कि फिल्म की स्क्रिप्ट भी बासु चटर्जी ही लिखेंगे| बासु के मन में उपन्यास के समर और प्रभा केलिए पहले से ही नाम तय थे| सारा आकाश के नायक समर केलिए 'राकेश पाण्डेय' और प्रभा केलिए 'मधु चक्रवर्ती' का चयन हुआ| समर के पिता केलिए 'एके हंगल' और माँ केलिए 'दीना पाठक' चुने गए| कलाकारों का नाम तय होने के बाद शूटिंग कहां ही इसपर विचार हुआ| बासु चटर्जी इस फिल्म की शूटिंग फिल्म स्टूडियो में नहीं करना चाहते थे| बासु चाहते थे कि फिल्म एक रियल कहानी की तरह दिखे| फिल्म में वैसा ही घर और माहौल दिखे जैसा उपन्यास को पढ़कर दिमाग में सीन आता है| राजेंद्र ने ही बासु की यह समस्या दूर कर दी| राजेंद्र यादव ने कहा कि यदि बासु चटर्जी चाहें तो वह आगरा के उनके पुश्तैनी मकान में शूटिंग कर ले| बासु राजी हो गए और अकेले ही सुबह वह राजेंद्र के साथ आगरा रवाना हो गए| बासु को वह मकान बहुत पसंत आया| इस तरह सारा आकाश फिल्म की शूटिन शुरू हुई| उपन्यास की कहानी में जहां पति-पत्नी एक साल तक एक-दूसरे से बात नहीं करते हैं तो वही फिल्म में इस अवधि को घटाकर एक महीने कर दिया गया था| फिल्म बनी और खास तरीके की फिल्म देखनेवाले दर्शकों द्वारा सराही भी गई|

'सारा आकाश' एक माध्यम हैं| लेकिन यह माध्यम दो विधाओं के ज़रिये समाज को एक नई दिशा प्रदान की है| वह डॉ विधओं है- सिनेमा और साहित्य| मनोरंजन करना सिनेमा की पूर्ण उद्धेश्य है,लेकिन साहित्य की उद्देश्य भी मनोरंजन करना है, लेकिन सिनेमा की तरह नहीं| साहित्य में पाठकों के मन में एक तरह की स्पर्श करना मुख्या उद्देश्य है| सिनेमा में पति-पत्नी, समर और प्रभा के मिलन और प्यार से खतम होते हैं| लेकिन साहित्य में इसके आगे ओर भी कहानी चलते हैं| वह इसप्रकार है कि अपनी बहन मुन्नी की मृत्यु,घर से बहार निकला और एक पागल के तरह इधर-उधर चला,फिर दुःख के ज़रिए उपन्यास की खतम हुआ|

'सारा आकाश' शीर्षक की सार्थकता

'सारा आकश' की शीर्षक प्रतीकात्मक है| लेखक के शब्दों में सारा आकाश की ट्रेजेडी किसी समय या व्यक्ति विशेष की ट्रेजेडी नहीं,खुद चुनाव न कर सकने की,दो अपरिचित व्यक्तियों को एक स्थिति में झोंककर भाग्य को सराहने या कोसने की ट्रेजेडी हैं| संयुक्त परिवार में जब तक यह चुनाव नहीं है,सकरी और गंदी गलियों की खिडकियों के पीछे लडकियाँ सारा आकाश देखती रहेंगी, लड़के दफ्तरों, पार्कों, और सड़कों पर भटकते रहेंगे|

एकांत आसमान को गवाह बनाकर आपस लड़ते रहेंगे, दो नितांत अकेलोम की यह कहानी तब तक सच हैं, जब तक उनके बीच का समय रुक गया है|

आकाश सबका गवाह हैं| आकाश के बिना कुछ भी न कर सकते| प्रस्तुत उपन्यास एवं सिनेमा में आकाश को विशेष महत्वपूर्ण स्थान देते हैं| समर और प्रभा के सारी व्यवहार के गवाह है- 'सारा आकाश', तो कह सकते है कि उपन्यास एवं सिनेमा की शीर्षक 'सारा आकाश' ही उचित हैं| इस शीर्षक की बराबर ओर कुछ नहीं|

सन्दर्भ

1. राजेंद्र यादव : सारा आकाश, पृ.सं:21
2. www.wikipedia.com
3. डॉ.डाली लाल : समकालीन हिंदी उपन्यास,पृ.सं:190